करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अभ्यास करने से मुर्ख व्यक्ति भी विद्वान् हो जाता है। भारतीय संस्कृति में पुनर्जन्म और पुरुषार्थ का विधान है। मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य मुक्ति को प्राप्त करना है। बंधनों से मुक्त होना, अनन्त सुख को प्राप्त करना मनुष्य का लक्ष्य है। मोक्ष शाश्वत सुख है। काम के लिए विवाह पद्धति एक साधन है। जिससे सामाजिक व्यवस्था चलती है। धर्म मनुष्य के लिए पूल का कार्य करता है। गृहस्थ में काम और अर्थ का सेवन होता है। धर्म से आत्मा शुद्ध होती है और अन्तिम लक्ष्य मोक्ष शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है। पुरुषार्थ से मनुष्य अपने भाग्य को बदल देता है। भाग्योदय में भी पुरुषार्थ आवश्यक है। पुरुषार्थ और भाग्य एक सिक्के के दो पहलु हैं। एकलव्य ने द्रोणाचार्य की प्रतिमा बनाकर गुरु मानकर आस्था के बल पर अर्जुन के समक्ष धनुरधारी बन गया। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि उसने अभ्यास के द्वारा धनुरविद्या सीखी और अपने को अर्जुन के समान बना लिया। चींटी अन्न का कण लेकर दिवाल पर बार–बार चढ़ती है और गिरती है, किन्तु प्रयास नहीं छोड़ती और एक दिन ऐसा समय आता है कि वह दिवाल पर चढ़ जाती है। अभ्यास करते–करते मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान् हो जाता है। नैसर्गिक प्रतिभा पुर्वजन्म के कर्म से प्राप्त होती है। अर्जित प्रतिभा को कठोर परिश्रम से प्राप्त किया जाता है। एक माता के दो पुत्रों में भी भेद देखा जाता है। एक भाग्यशाली है जो पुर्वजन्म के कर्म के अनुसार सुख भोगता है और दूसरा परिश्रमी जो अभ्यास के द्वारा अपने भाग्य को बदल कर आगे बढ़ जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में निष्काम कर्म का उपदेश दिया है। चरैवेति–चरैवेति से कार्य की सिद्धि होती है यदि आदमी हार मानकर के बैठ जाये तो उसका भाग्य भी सो जाता है। इसलिए सदैव पुरुषार्थ करके आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। मोती को प्राप्त करने के लिए समुद्र की गहराई में उतरना पड़ता है। किनारे बैठने से मूर्ति की प्राप्ति नहीं होती। कर्मयोगी कर्म में विश्वास करता है। कर्म करने से संतोष की प्राप्ति

होती है। इसलिए सदैव कर्म करते रहना चाहिए। कर्म करने से ही मनुष्य को सिद्धि प्राप्ति होती है। एक स्थान पर स्थित हो जाने पर मानव निष्क्रिय हो जाता है। उसकी प्रगति नहीं हो सकती।

जल यदि एक स्थान पर स्थित रहता है तो उसमें बदबू आने लगती है परन्तु यदि जल बहता रहता है तो उसमें शुद्धता, निर्मलता और सुन्दरता बनी रहती है। प्रकृति हमें यह शिक्षा देती है कि सदैव आगे बढ़ते रहना चाहिए। प्रयत्न करने से मनुष्य को पीछे नहीं हठना चाहिए। मुख्य रूप से यह सूत्र विद्यार्थियों पर अधिक लागू होता है। विद्यार्थी को अपने मंजिल को प्राप्त करने के लिए दूरदृष्टि और पक्का इरादा रखना चाहिए। असफलता से कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। असफलता को जीतने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति हार मानकरके रुक जाता है उसका भाग्य भी वही रुक जाता है। भाग्य के भरोसे बैठकर कभी भी रुकना नहीं चाहिए। संसार में जितने भी महापुरुष हुये हैं उन्होंने चरैवेति–चरैवेति का सूत्र अपने जीवन में लागू किया। इसी का परिणाम है कि वे महान् कहलाये। प्रोफेसर (डॉ.) सोहनराज तातेड़ ने भारत रत्न प्राप्त कर्त्ताओं का जीवनवृत एक पुस्तक में प्रस्तुत किया है। भारत रत्न प्राप्त कर्त्ताओं का जीवनवृत पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि महानता जन्म से नहीं प्राप्त होती बल्कि अर्जित की जाती है। ऐसे महापुरुषों का जीवन चरित्र समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। जितने भी महान् लोग हुए हैं बचपन में उन्हें घोर कष्ट का सामना करना पड़ा है। उन्होंने कष्टों के सामने हार नहीं मानी बल्कि कष्टों पर विजय प्राप्त की और भारत रत्न को प्राप्त किया।

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी का जीवन भी इस संबंध में अवलोकनीय है। जीवन के प्रारंभिक समय में उन्हें कैसी–कैसी आपदाओं का सामना करना पड़ा, यह भारतीय लोगों से छिपी नहीं है। वह स्वयं भी बहुत बड़े कर्मयोगी है। एक छोटे से गरीब परिवार में उत्पन्न होकर भारत जैसे देश के प्रधानमंत्री पद को अलंकृत किया है यह उनकी पुरुषार्थी मनोवृत्ति का सबसे बड़ा उदाहरण है। उनके द्वारा जीवन क्षेत्र में किया गया पुरुषार्थ उनके मार्ग को प्रशस्त किया है। उन्होंने कठिनाईयों को कभी अपने ऊपर भारी नहीं होने दिया बल्कि कठिनाईयों को जीतकर उस पर विजय प्राप्त की। जीवन में आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ बहुत आवश्यक है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समयबद्ध प्रयास होना जरूरी है। समय–समय पर

कार्य की समीक्षा भी करते रहना चाहिए। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है। परन्तु बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती हैं अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते हैं। हममें से अधिकांश लोग जिन्हें मनवांछित वस्तुएं प्राप्त नहीं होती हैं वे स्वयं की कमियों को देखने की बजाय भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते हैं। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते हैं जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते हैं, वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसित होता है। पुरुषार्थी अथवा कर्म पर विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर उसका निवारण करने का प्रयास करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। जीवन संघर्ष में वह निरंतर अग्रसित होता है।